शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जितेन्द्र श्रीवास्तव कृत 'कायांतरण' में लोक-चेतना

मनोज कुमार कुँवातिया
हिन्दी विभाग
डॉ.बी. आर. अम्बेड़कर समाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
महू, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

समकालीन कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव का नवीनतम 'काव्य संग्रह' कायांतरण जीवन के लगभग सभी तथ्यों पर प्रकाश डालता है। इनकी कविताओं में लोक-तत्व, लोक संवेदना और लोक समस्याओं को भरपूर मात्रा में व्यक्त किया है। लोक चेतना संबधी तथ्यों के अंतर्गत लोक जीवन, लोक चेतना, जन चेतना, मानसिकता और रिश्तों पर मशीनीकरण (मंत्रीकरण) का प्रभाव, सामान्य की कविता, लोकस्थिति, आदर्शवादिता का विरोध, सामान्य जनवादी भावना, इत्यादि पर प्रकाश डाला है। सिंदूर, तुरंता हो चुकी इस दुनिया में सरकार की नजर , लोकतंत्र में, लोक कलाकार, प्रधानमंत्री का दुःख, हमारा देश, नाचने-गाने का समय, अँधेरा, पुकार, अपनों के मन का, तो जनता धिक्कार है तुमको। दुनिया बदलने के लिए इत्यादि। प्रस्तुत शोध पत्र में जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य संग्रह 'कयांतरण' में लोक-चेतना का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

समाज की जड़ निम्न वर्ग होता है और उसी का अप्रत्याशित कष्ट हुआ है। अल्प वेतन-भोगी , नौकर-चाकर, भूमिहीन श्रमिक , छोटा किसान , जनजातियों के लोग यह सब जनक्रांति का मसाला है। इसमें आग लग जाये तो उच्च मध्यवर्गीय व्यवस्था घुन खाई दीवार की तरह गिर सकती है। ताराप्रकाश जोशी कुछ न होने के लिए (यानी क्रांति न होने के लिए) जड़ताग्रस्त आम आदमी की कुंद जेहनियत पर आक्रमण करते हैं। अतः यह कहना गलत है कि समकालीन कवि 'सामान्य जन ' को रोमेंटिक महत्व दे रहे है। बस इतना ही है कि कवि साधारण जन की जड़ता की जड़ता का उत्तरदायित्व खास लोगों पर डालते हैं, क्योंकि खास लोगों की जन विमुखता से ही आम आदमी इतना अशिक्षित , अज्ञानग्रस्त, निष्क्रिय और असहाय हो गया है। फिर भी उसकी आँखों में अंगुली डाल कर उसे जगाना जरूरी है।

ताराप्रकाश जोशी कहते हैं कि "धूप में सूखने और फैलने से क्या होगा। क्या होगा , मोहल्ले की अच्चाई पर बैठकर /खैनी खाते हुए पिच-पिच थूकते रहने से हर सड़क वही खत्म हो जाती है। जहाँ थकान शुरू होती है। चमड़ी खाल हो गई है और आदमी पखाल।"1

रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि "सच्चा कवि वही है जिसे लोक हदय की पहचान हो , जो अनेक विशेषताओं और विचित्रताओं के बीच मनुष्य जाति के सामान्य हदय को देख सके। इसी लोक हदय में लीन होने की दशा का नाम रस दशा है।"2

हिन्दी शब्द सागर के अनुसार लोक का अर्थ संसार, जगत, स्थान, लोग, जन, समाज, मानवजाति चक्षुरिन्द्रिय आदि है। यह पौराणिक लोक से

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भिन्न धारण है। यूँ तो समूचे साहित्य और कला माध्यमों का रिश्ता लोक से है। भक्ति काल की कविता में लोक का विभिन्न माध्यमों से रचा गया है। आचार्य शुक्ल बार-बार लोक की बात करते हैं। उनके कुछ पद हैं-लोक मंगल, लोक संग्रह, लोकवाद, लोकबद्ध, लोक रंजन, लोकरक्षा, लोकधर्म, लोक सौन्दर्य और लोक रीति आदि। लोक का केन्द्रीय लक्षण सामुदायिकता है। जाहिर है कि लोक का महत्व असंदिग्ध है। राजनीति, समाजनीति और अन्य शास्त्र और उसकी शाखाएँ लोक को महत्ता देती हैं। लोकतंत्र, लोक कल्याण जैसे शब्द अभी भी हमारे साथ हैं। इस लोक का साथ लिए बिना हमारी विकास यात्रा भी उलझ जाती है।

वासुदेवशरण अग्रवाल मानते हैं, "लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है। उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है। अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है। लोक-लोक की छात्री सर्वभूत माता पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानव यही हमारे नए जीवन का अध्यात्मशास्त्र है। इसका कल्याण हमारी मुक्ति का और निर्माण का नवीन रूप है।"3

जब कविता या अन्य कला रूप लोक से अलग जाने का प्रयत्न करते हैं तो निश्चय ही वे स्वयं प्रभाहीन हो जाते हैं।

रीतिकाल की कविता और प्रयोगवाद से लेकर नई कविता भी एक विशिष्ट धारा, व्यक्तिवाद, लघुमानववाद, क्षणवाद और कांग्रेस फार कल्चरल फ्रीडम की सुरंग में समा जाती है। लोक की कविता के बरक्स कविता का लोक बन जाती है, तो उसमें एक खास तरह का ठण्डापन तो आता ही है। वह अपनी विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगा देती है।

जितेन्द्र श्रीवास्तव और कायांतरण

लोक चेतना के उभार के दो रूप होते हैं, शांत और उद्भुत। चुप्पी और बड़बोलापन लेकिन ऐसा नहीं है कि सबकी अभिव्यक्ति नहीं होती, विजेन्द्र की कविता ने इसी रूप में सहेजा है कि "जिन्दा है लोग अकाल झेलकर। जिन्दा है लोग लोहा पहनकर। जिन्दा है लोग धमन भट्टियों के सामने।"4 लोकचेतना के संबध में श्रीरंग अपने लेख 'कवि कर्म ' की सार्थकता में जितेन्द्र श्रीवास्तव के नवीनतम काव्य संग्रह 'कायांतरण' पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं "ये कविताएँ शोषण और दमन के विरूद्ध अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं, मनुष्यता विरोधी कार्यप्रणालियों का भंडाफोड़ करती हैं, मनुष्य को नए लोक के स्वप्न का दर्शन कराती हैं, मनुष्य को प्रकाश की ओर, उसके जीवन की ओर ले जाती हैं। ये अपना आदर्श गढती हैं, और नए आदर्श की ओर बढ़ती हैं। ये दूषित सडे-गले वातावरण को बदलकर नई चेतना, नई ऊर्जा और नए जीवन की स्थापना करना चाहती हैं और मन में नई चेतना का संचार करती हैं।"5

'सिंदूर' कविता में कवि ने भारतीय परंपरा, विश्वास, प्राचीन रूढ़ियाँ तथा भारतीय नारी की दशा का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही लोकजीवन एवं लोक चेतना संबधी तथ्य भी प्रस्तुत किये है। कवि परंपराओं तथा रूढ़ियों की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहता है कि विवाह के बाद स्त्रियाँ सिंदूर क्यों लगाती है, जबकि पुरूष के लिए ऐसा कोई प्रतीक निर्धारित नहीं किया है। कवि ने पुरूषवादी विचारधारा को खण्डित करने के लिए इस स्थिति को स्पष्ट किया है। आगे कवि कहता है कि जब उसने लोगों से पुरूष के प्रतीक धारण न करने का कारण पूछा, तो उन्होंने बताया कि पुरूष प्रतीक है स्वयं और प्रतीक नहीं

धारण करते है प्रतीक। जब कवि अपनी पत्नी को सिंदूर लगाना मना करता है तो वह कवि पर बिगड़ जाती है, और कहती है कि इस प्रकार के अपशकुन अपने मुँह से न निकाला करें, शुभ-शुभ बोला करें। उजागर करते हुए कहा है कि यह जो अनादिकाल से घुला हुआ है रक्त-मज्जा-विवेक में वह कैसे निकलेगा। इस प्रकार कवि के 'सिंदूर' कविता के माध्यम से पुरूषवादी विचारधारा पर व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया है तथा साथ ही स्त्री दशा तथा व्यर्थ की परंपरा एवं रूढ़ियों को यथार्थ रूप में व्यक्त किया है कि किस प्रकार ये समाज के लिए घातक है-

"सिंदूर क्यों लगाती हैं स्त्रियाँ
विवाह के बाद
विवाह तो पुरूष का भी होता है
उसके लिए कोई प्रतीक निर्धारित नहीं हमारी परंपरा में
पुरूष प्रतीक है स्वयं
और प्रतीक नहीं धारण करते हैं प्रतीक
जो डर अनादिकाल से
घुला हुआ है
रक्त-मज्जा-विवेक में
वह कैसे निकलेगा"6

सुलोचनादास अपने लेख में कहती है कि "स्त्री जीवन को उसकी नारकीय स्थिति से मुक्ति दिलाने की चेतना भी इस कवि (जितेन्द्र श्रीवास्तव) में दिखाई पड़ती है। इसलिए वह सिन्दूर रूपी बंधन को तोड़ने का आग्रह अपनी पत्नी से करता है , किन्तु पत्नी इस तरह की बातों को अपशकुन कह उल्टा कवि पर ही बिफर पड़ती है। कवि महसूस करता है कि सिंदूर को लेकर जो भय स्त्रियों के मनः पटल पर अनादिकाल से छाया हुआ है , उसे इतनी आसानी से नहीं मिटाया जा सकता है।"7

'तुरंता हो चुकी इस दुनिया में' कविता में कवि ने जनचेतना, पूंजीवादी-व्यवस्था का विरोध , मानसिकता और रिश्तों पर मशीनीकरण (यंत्रीकरण) का प्रभाव इत्यादि विषयों पर गहरा प्रकाश डाला है। कवि ने सामान्य जन को जागृत करने के लिए विभिन्न स्थितियों को व्यक्त किया है। कवि मानवीय रिश्तों तथा संवेदना पर यंत्रीकरण के प्रभाव को व्यक्त किया है कि किस प्रकार फोन के माध्यम से रिश्तों में बदलाव आया है। आज मनुष्य इतना सुविधाभोगी हो गया है कि उसके रिश्तों में मन्दता आ गयी है। कवि ने अमेंरीकावादी विचारधारा का भी खण्डन किया है और कहा है कि पूरी दुनिया अमेरीकावादी नहीं है। अभी-भी उम्मीद की नदी नहीं सूखी है। लोग इतने विवेक शून्य नहीं हुए हैं कि वे यह जान न पाये कि तमाम शक्ति के बावजूद भी अमेंरीका अंतिम सत्य नहीं है-

"पर फोन नहीं है जीवन/फिर कैसे हो जाता है जाम/रिश्तों का नेटवर्क/
जितनी तेजी से मनुष्य हुआ है सुविधाभोगी/उतनी ही तेजी से कम हुई है/
आत्मा में रिश्तों की आवाजाही/लेकिन
अमेंरीकावादी नहीं है पूरी दुनिया/
वे तय करेंगे अपना सच , अपना रास्ता/वे आँखें मूँदकर नहीं स्वीकार करेंगे कुछ भी/अभी लोग इतने विवेक शून्य नहीं हुए है/कि जान न सकें/
कि तमाम शक्ति के बावजूद/अंतिम सत्य नहीं है अमेरीका"8

सुलोचना दास अपने लेख में कहती हैं कि "भारत के अमेरीकीकरण की होड़ मची हुई है। हर चीज का मशीनीकरण हो रहा है। इंटरनेट का व्यापक मकड़जाल फैल चुका है। ताकि दुनिया बड़ी आसानी से विश्व की हरकत पर निगरानी रख सके, अपने जीवन को सरल और सुविधामय बना

सके। मगर अमेरीकीकरण की इस होड़ ने चीजों के मशीनीकरण के साथ-साथ मनुष्य और उसके संबधों का भी मशीनीकरण कर दिया है। खबरों के मामले में तुरंता हो चुकी इस दुनिया में किसी को किसी की फिक्र नहीं। जैसे एक निर्जीव, कठोर लोहे से बनी मशीन को दूसरी मशीन की फिक्र नहीं होती। आज का मनुष्य इतना संवेदन हीन होता जा रहा है कि नेटवर्क की तरह रिश्ते भी जाम होने लगे है।"9

'सरकार की नजर ' कविता में कवि ने सामान्य जन की विडंबना को व्यक्त किया है। यह कविता सामान्य जन की कविता है। सच्चिदानन्द नामक एक व्यक्ति के माध्यम से सामान्य जन जीवन को प्रस्तुत किया है। उसकी सामान्य अनिवार्य आवश्यकताएँ, रोटी, कपड़ा और मकान को पूरी करने में भी बहुत परेशानी आती है। उसकी आय इनके लिए पर्याप्त नहीं होती -

"एक छोटी-सी नौकरी/एक छोटा-सा परिवार/
छोटी-छोटी जरूरतें/छोटे-छोटे सपने/
और अलग-अलग लिफाफों में रखा जाता है /
दूध, सब्जी और किराने का हिसाब"10

'लोकतंत्र में लोककलाकार ' कविता में कवि ने लोक जीवन की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत किया है। कवि कहता है कि व्यक्ति अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए लोक कलाकारों का अप्रत्यक्ष रूप से शोषण करता है। अपना लाभ सिद्ध करता है, किन्तु उस लोक कलाकार से कोई नहीं पूछता, उनके बच्चों की शिक्षा, उनके घर उनकी गरीबी के बारे में। कवि ने लोक कलाकारों के जीवन के संबध में चिंता व्यक्त की है। साथ ही उन्हें जाग्रत करके की कोशिश भी की है-

"वे नहीं पूछते/उनके बच्चों की शिक्षा , उनके घर
और उनकी गरीबी के बारे में/
लेकिन वे जानते हैं/लोक कलाकारों की तस्वीरें
और उनकी दरिद्रता/
खूब यश दिलाएँगी उन्हे और उनकी पुस्तक
को"11

'प्रधानमंत्री का दुःख ' कविता में कवि ने बढ़ती महँगाई और सामान्य जन की समस्याओं को प्रकट किया है। कवि ने बड़ी ही सरलता से चार आने (चवन्नी/पच्चीस पैसे) के माध्यम से गिरती अर्थव्यवस्था और बढ़ती महँगाई के साथ में सामान्य जन की परेशानियों और विडंबना पर भी प्रकाश डाला है। कुछ वर्षों पहले लोगों ने चवन्नी में समोसे खाये तथा चाय पी थी-

"उन्होंने पच्चीस पैसे में जरूर खाये होंगे समोसे
और पी होगी चाय भी चवन्नी में"12

इस प्रकार कवि ने बढ़ती महँगाई व पूँजीपतियों का विरोध किया है। साथ की सामान्य जन की त्रासदी को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। कवि सामान्य जन को इन समस्याओं से अवगत करवा कर जगाना चाहता, जाग्रत करना चाहता है, कि उठो और इनके विरोध में अपने हित में आवाज उठाओ। कवि कहता है कि प्रधानमंत्री महँगाई के कारण चिंतित है किन्तु वे बाहरी दबाव के कारण मजबूर हैं, तब कवि सामान्य जन को जाग्रत करने के लिए कहते हैं कि जनता ने प्रधानमंत्री से सवाल पूछना बन्द कर दिया है , वरना पूछती कि देश की जनता बड़ी है या बड़ा है बाहरी दबाव है। अरूण होता अपने लेख में 'प्रधानमंत्री का दुःख' कविता के संदर्भ में टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि "बाजारवादी अर्थव्यवस्था में पूँजी ने एक बड़ी जमात उत्पन्न कर दी है, जो आम आदमी या मामूली आदमी या राजेश जोशी के शब्दों में कहें तो 'इत्यादि' को लीलती जा रही है। कवि की चिन्ता है, वे अपनी कारों से रौंद देते

है, अक्सर उन्हें/जिन्हें हिन्दी कविता में हम आम आदमी कहते है।"13

जहाँ अनुभव धूप में अपनी देह सुखाता है' कविता में कवि विभिन्न दृष्टांतों के माध्यम से सामान्य जनजीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। कवि ने मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने की इच्छा प्रकट की है , उसे किसी धर्म , जाति, सम्प्रदाय इत्यादि में नहीं -

"मनुष्य को मनुष्य ही समझा जाना चाहिए/
हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई नहीं
बामन, बनिया, ठाकुर, कायथ और अन्य नहीं"14

कवि ने सामान्य मनुष्यता पर बल दिया है। वह इस मनुष्यता को किसी भी रूप में बँटता हुआ नहीं देखना चाहता है। आगे कवि सामान्य जन जीवन को प्रस्तुत करता है। वह कहता है कि चमकती हुई इस दुनिया में ऐसे भी लोग है जो बडे-बडे गहरों में सड़क के किनारे सायकिल से चलते है, पैदल चलते हैं और ऐसे लोग भी हैं जिसके पास बस का खर्च भी नहीं है। कवि ने सामान्य जन जीवन का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। कवि की भावनाएँ सामान्य जन के साथ है इसीलिए उसकी विडंबना पूर्ण जिंदगी की वास्तविक स्थिति को बड़ी ही सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है।

'नाचने-गाने का समय ' कविता में कवि ने 'मेंरे देश' की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती' गीत को आधार बनाकर उसकी आदर्शवादिता पर प्रहार करते हुए सामान्य जन , किसान मजदूरो की यथार्थ स्थिति को स्पष्ट किया है। कवि कहता है कि गीतकार ने बडे ही ओज और आदर्श में 'मेंरे देश की धरती सोना उगले नामक गीत की रचना की, किन्तु किसान की वास्तविक स्थिति को प्रकट नहीं किया, कि किसान की समस्याओं और विडंबना को व्यक्त नहीं किया। धरती सूख रही है, किसान भी सूख रहा है , उसके पास खाने-पहनने को कुछ नहीं है। किसान की हालत बड़ी ही दयनीय है -

"लेकिन नहीं लिखा/मेंरे देश की धरती सूखी जाए/सूखा जाए किसान रे
उसके तन पर वसन नहीं/घर में नहीं पिसान रे"15

आम आदमी की हालात पर टिप्पणी करते हुए सुलोचना दास अपने लेख में कहती हैं कि "पूँजी और सत्ता के खेल में आम आदमी की जिंदगी गेहूँ की तरह पीसती रहती है। उसकी रसोई खाली पड़ी है। तन ढँकने को कपड़ा नहीं और न ही सिर पर कोई छाया है। इस कारण उसका मन भी रीता हो गया है। समय बदला, सभ्यता बदली, शोषण का रूप भी बदला, पर नहीं बदली तो सिर्फ आम आदमी की नियति। 'नाचते गाने का समय' शीर्षक कविता में कवि ने साफ-साफ कहा है कि जमाना बदल गया पर भूख और लाचारी का जीवन जीने वाले लोगों की जिंदगियां नहीं बदलीं। आज भी असंख्य 'होरियों' की गर्दन नए राय साहबों की टाँगों के बीच दबी है। किसानों-मजदूरों की दशा आज भी जस की तस है। कवि को क्षोभ है कि देश के कवियों ने ओजस्वी गीत तो जरूर लिखे , मगर कभी उन्होंने देश की वास्तविकता का जायजा कराने वाले गीत नहीं लिखे।"16

'हमारा देश' कविता में कवि ने एक गीत 'जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा वो भारत देश है मेंरा की आदर्शवादिता से पर्दा हटाकर यथार्थ स्थिति को प्रस्तुत किया है। कवि कहता है कि यदि देश में सोने की चिड़िया बसेरा करती है या कभी करती थी , तो देश में इतनी गरीबी, क्यों है-

"यदि ऐसा है/या था/तो गरीबी और जलालत का लंबा इतिहास/
कैसे पसरा रहा लोगों के सिरहाने"17

आगे कवि कहता है कि में पूरे यकीन से कह सकता हूँ कि इस देश के किसान और मजदूर इस बात को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। वे अपने पूर्वजों की रूलाई को कभी नहीं भूला पाएँगे। यहाँ पर कवि ने किसानों-मजदूरों 'जनसामान्य' की स्थिति का यथार्थ रूप में चित्रण किया है साथ ही आदर्शवादिता का विरोध कर जनचेतना फैलाने का प्रयास किया है। कवि सामान्य जन , गरीब किसान-मजदूर की भावनाओं को भलीभाँति समझता है, इसीलिए वह उनको जागरूक करने के लिए कहता है कि वे स्वयं अपनी स्मृति के आधार पर अपना वास्तविक इतिहास लिखेंगे। इस प्रकार कवि ने किसान-मजदूरों की वास्तविक स्थिति का चित्रण कर जन-सामान्य को जाग्रत करने का प्रयास किया है। कवि आदर्शवादिता को छोड़कर यथार्थता पर बल देता है। 'अँधेरा' कविता में कवि ने एक गाँव का चित्रण किया है जहाँ एक नाली के कारण झगड़ा इतना बढ़ गया कि खून-खराबा तक हो गया। विधवाएँ विलाप कर रही है। जिस नाली से गंदा पानी बहता है उसी नाली से झगडे के कारण खून बहा है कि

"झगड़ा महज एक नाली का था/जिसके आगे बेमोल हो गए जीवन
जिस नाली से बहता है गंदा पानी/उसी में बहा गर्म खून"18

कवि ने उपर्युक्त कविता में लोकचेतना को प्रस्तुत किया है। लोगों को इन स्थितियों से अवगत कराने का प्रयास किया है। 'पुकार' कविता में कवि ने स्त्री दशा का यथार्थ रूप में चित्रण कर पिताओं को उनकी बेटियों की दयनीय स्थिति से परिचित कराकर चेतना का प्रसार किया है। कवि कहता है कि वे माँ-बाप अपनी बेटियों के नाम तो सुभागी , रानी, सोनी इत्यादि रखते हैं, किन्तु उनका जीवन अपने नाम के विपरीत चला जाता है-

"माँ-बाप नाम रखते हैं बेटियों के / सुभागी, रानी, सोनी / और जीवन विपरीत चला जाता है नाम के"19

इस प्रकार कवि में बेटियों के माध्यम से अपने पिताओं को पुकार द्वारा चेताना चाहा है कि अपनी बेटियों को जीवन भर का दुःख मत दो, ये तुम्हारी ही बेटियाँ है। कवि ने इसके माध्यम से लोकचेतना को अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'अपनों के मन का' कविता में कवि ने स्पष्ट रूप से कहा है कि वह सामान्य जन का कवि है। कवि ने सामान्य जन की स्थिति को व्यक्त किया है। कवि कहता है कि में उन मजदूरों , गरीबों, आम आदमी का कवि हूँ, जिनके कंधे बोझ उठाते हुए घुस गए हैं। जिनको आँख भर नींद नहीं है और पेट भर खाना नहीं है-

"मैं कवि हूँ उन कंधों का/जो घूस गए है बोझ उठाते / जिनको नहीं मयस्सर नींद आँख भर/नहीं मयस्सर अन्न आँत भर"20

कवि तथा कविता पर टिप्पणी करते हुए अरूण होता अपने लेख में दारूण समय में कविताई के निहितार्थ में कहते हैं कि "कवि जितेन्द्र 'आम आदमी' के साथ है। यों कह सकते है कि वह आम आदमी के बीच है। भयानक दुख-कष्ट और संताप के चक्रव्यूह में फैले किसान , मजदूर और निर्धनों की हिमायत करती है जितेन्द्र की कविताएँ।"21

कविता में कवि ने सीधे-सीधे जनता पर प्रहार करते हुए उसे चेताने का प्रयास किया है। कवि कहता है कि जनता तुमने जिन नेताओं को जाति, क्षेत्र, धर्म और न जाने किन-किन भावों से

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चुना है, वे तुमको बेच रहे हैं, तुम्हारे हितों को काटकर अपने स्वार्थो की पूर्ति कर रहे हैं। वे षड्यंत्र कर आम आदमी , गरीब मजदूर किसानों के हितों को अपनी जेबों में भर रहे हैं। कवि उपर्युक्त विषय में जनता को सीधे चोट करते हुए कहता है कि जनता अब तो जाग जाओ और अगर अब भी तुम्हें ये सब स्वीकार है तो जनता धिक्कार है तुमको-

"देखो जनता/यही तुम्हारे भाग्य विधाता/
(जिन्हें चुना तुमने जाति,/क्षेत्र, धर्म और न जाने किन-किन भावों से)/
बेच रहे हैं तुमको/नोच-नोच कर खा रहे है तुम्हारे सपनों को/
जो अब भी ये स्वीकार है तुमको तो जनता धिक्कार है तुमको।"22

कवि ने सीधे एवं सपाट शब्दों में जनता , आम आदमी को जगाया है, उसे चेताया है कि अब तो इन्हें समझ जाओ, और अपने कर्तव्य का पालन करो। 'दुनिया बदलने के लिए' कविता में कवि ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए शहीद हो गए महात्माओं को याद किया है साथ ही उन लोगों को भी व्यंग्य के माध्यम से जागरूक किया है जो उन्हें बस समाचार पत्रों या कैलेण्डरों में देख कर ही याद करते हैं। कवि जन सामान्य को चेताना चाहता है। वह बताना चाहता है कि जो लोग मुक्ति के शिल्पकारों और दार्शनिकों को याद करते है उन्हें सनकी करार दिया जाता है , उन्हें अवसरवाद की आँधी में पिछड़े और अप्रासंगिक बताया जाता है किन्तु फिर भी वे हार नहीं मानते हैं। इसलिए बहुत लोगों को वे अखरते है। किन्तु फिर भी कुछ लोग उनको उम्मीद भरी नजरों से देखते हैं। आगे कवि कहते हैं कि दुनिया को बदलने के लिए लोगों की भीड़ की जरूरत नहीं होती, बल्कि विचारों और हौसलों की जरूरत होती है-"उनका न हारना/अखरता है बहुत से लोगों को/
पर कुछ लोग उम्मीद से देखते है उनकी ओर /क्योंकि वे जानते हैं
दुनिया को बदलने के लिए/भीड़ की नहीं
विचारों और हौसलों की जरूरत होती है।"23

संदर्भ ग्रन्थ

1. *विश्वंभरनाथ उपाध्यायः समकालीन साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 27-28-29*
2. *वासुदेवशरण अग्रवाल: सम्मेलन पत्रिका , लोक संस्कृति अंक,14 पृष्ठ 86*
3. *वही, पृष्ठ 86*
4. *सुलोचना दास समय का सच और 'कायांतरण, जनपथ सितंबर 2012, पृष्ठ 95*
5. *जितेन्द्र श्रीवास्तव:कायांतरण, पृष्ठ 79-80*
6. *सुलोचना दास समय का सच और 'कायांतरण, जनपथ सितंबर 2012, पृष्ठ 92*
7. *जितेन्द्र श्रीवास्तव:कायांतरण, पृष्ठ 87-89*
8. *वही, पृष्ठ 90-92*
9. *वही, पृष्ठ 111-112-113*
10. *अरूण होता-दारूण समय में कविताई के निहितार्थ: नया ज्ञानोदय, फरवरी, पृष्ठ 67*
11. *जितेन्द्र श्रीवास्तव:कायांतरण, पृष्ठ 118*
12. *वही, पृष्ठ 46-47*
13. *सुलोचना दास: समय का सच और 'कायांतरण जनपथ सितंबर 2012, पृष्ठ 92-93*
14. *जितेन्द्र श्रीवास्तव:कायांतरण, पृष्ठ 41-42*
15. *वही, पृष्ठ 50-51*
16. *वही, पृष्ठ 44-45*
17. *वही, पृष्ठ 66-67*
18. *वही, पृष्ठ 66-67*
19. *अरूण होता-दारूण समय में कविताई के निहितार्थ: नया ज्ञानोदय, फरवरी, पृष्ठ 67*
20. *जितेन्द्र श्रीवास्तव: कायांतरण, पृष्ठ 57*
21. *वही, पृष्ठ 84-85*
22. *वही, पृष्ठ 88*
23. *वही, पृष्ठ 68*